AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ी संस्कृति के लोकगाथा की विवेचना

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अलका यतीन्द्र यादव
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
पी.एन. एस. महाविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

छत्तीसगढ़, भारत का एक प्राचीन राज्य है जिसमें समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति में लोकगाथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। ये लोकगाथाएं रोचक कथाएं हैं जो लोगों के जीवन, संस्कृति, और परंपराओं को दर्शाती हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में साधारणतः गाँवों और जनजातियों के जीवन के घटनाक्रम, विभिन्न देवी–देवताओं की कथाएं, प्राचीन संस्कृति के विषय, और प्राचीन जीवनशैली को बताने का प्रयास किया जाता है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएं स्थानीय भाषा में गाई जाती हैं और इनमें स्थानीय रंग–बिरंगे पात्र, संगीत, और वाद्य भी शामिल होते हैं। ये गाथाएं समाज की भावनाओं, संवेदनाओं, और सोच को प्रकट करती हैं और समाज के साथ जुड़ी होती हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में विविधता और रंगमंचन की भरपूरता होती है। इनमें राजकुमारी–राजकुमार, परीकथाएं, भूत–प्रेत की कहानियाँ, अनेक देवी–देवताओं के जन्म कथाएं और जीवनी शामिल होती हैं। ये लोकगाथाएं लोगों के बीच आदर्शों, मूल्यों, और नैतिकता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं और समाज की सामाजिक संरचना को समर्थ बनाती हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएं लोकप्रियता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। ये कथाएं लोगों के बीच पसंद की जाती हैं और सामाजिक सम्मेलनों, मेलों, और उत्सवों में अधिकतर सुनाई जाती हैं। इसके अलावा, लोकगाथाओं का महत्व अनेक लोककथा संग्रहों और साहित्यिक कामों में भी उजागर होता है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़ी संस्कृति, लोकगाथाएं, जनजातियों, प्राचीन जीवनशैली.

प्रस्तावना

''छत्तीसगढ़ी जनपद के प्रायः समस्त प्रधान लोकगीतों में किसी न किसी रूप में लोकगाथा का समावेश रहता है। लोकगाथा की परंपरा वैसे हर लोकगीतों में पायी गई है जो कि उस क्षेत्र में घटित कोई एतिहासिक घटना से संबंधित रहती है। ये घटना राजनैतिक, ऐतिहासिक, प्रेम–प्रासंगिक, वीरतापूर्ण तथा विभिन्न परिस्थिति जन्य प्रभावों से युक्त होते हैं। इन लोकगाथाओं का निर्माण काल मध्ययुग है, अतः तात्कालीन परिस्थितियों का चित्रण इनमें मिलता है, अक्सर कथा के नायक में वीरता अधिक है। वीरतापूर्ण प्रधानगुणों में नारियाँ भी पुरूषो से पीछे नहीं है। प्रायः सभी लोकगाथाएँ किसी न किसी कहानी को लेकर चलती है, और यद्यपि मूलतः ये कहानिया ही है, परन्तु गेय है।''[1]

परिभाषाएँ

साधारण अर्थ में गाथा शब्द का शाब्दिक अर्थ कथा कह सकते हैं, परन्तु कथा और गाथा में अन्तर है। कथा कहानी मात्र है जबकि गाथाओं में वे कहानियाँ सम्मिलित की जा सकती हैं, जो अत्यधिक विकसित व लम्बी हों। जिसे कहने या सुनने में अधिक समय लगे और जो इतिहास से संबंधित हो।

संस्कृत के अमर कोष के अनुसार ''गाथा'' शब्द का अर्थ है– पित्तर गण, परलोक और ऐसे ही अन्यान्य विषयों से संबंध अनुश्रुतियों पर आधारित पद्य या गीत है।[2]

अंग्रेजी में गाथा के लिए ''बैलेड'' शब्द का प्रयोग किया गया है। बैलेड शब्द की उत्पत्ति मूलतः लेटिन भाषा के 'बेलारे' शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है– नृत्य करना।[3] पाश्चात्य देशों में लोकगाथा 'बैलेड' के नाम से ही जानी जाती है। वैसे भिन्न–भिन्न देशों में इसके अर्थ भी पृथक हैं। फ्रान्स में ''चासास पापुलेरी'', जर्मनी में 'होक स्लाइडर', डेनमार्क में 'फोकेवाइजर', स्पेन में 'रोमेनकेरी', रूस में 'बिलीना', स्पेनिश में 'रोमांश', डेनिश में 'वाइज' आदि।

प्रो. जी. एल. कोट्रिज के अनुसारः ''बैलेड वह गीत है जो कोई कथा कहता हो अथवा दूसरी दृष्टि से विचार करने पर बैलेड वह कथा है जो गीतों में कही गई हों।''[4]

श्री फ्रेंकसिजविक के अनुसारः ''लोकगाथा वह सरल वर्णनात्मक गीत है जिसका सीधा संबंध जन सामान्य से होता है और जो एक से दूसरे को मौखिक रूप से हस्तान्तरित होती है।''[5]

इस प्रकार विद्वानों ने लोकगाथा की अनेक परिभाषाएँ दी है जो बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। लोकगाथा को केवल गीत कह देना अनुपयुक्त होगी। इसमें गेयता के साथ ऐतिहासिकता एवं प्रबंधात्मकता का गुण भी है। यद्यपि यह लिपिबद्ध नहीं है तथापि इसका मौलिक महत्व सार्थक एवं आवश्यक है।

डॉ. विनय कुमार पाठक लोकगाथाओं में प्रबंध काव्यत्व निरखते हुए लिखते हैं– ''इन लोकगाथाओं में छंदों की शिथिलता विद्यमान है और विषय प्रतिपादन के प्रति भी ध्यान कम है फिर भी ये लोकगाथाएँ प्रबंध गीतों की महिमा से मंडित हैं। इन्हें लोकगाथा ही समझकर विवेचन करना समीचीन नहीं जान पड़ता।''[6]

इसी परिप्रेक्ष्य में लोकगाथा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए डॉ. शंकर लाल यादव ''लोकगाथा को महाकाव्य'' मानते हैं। छत्तीसगढ़ में विभिन्न लोकगाथाएँ प्रचलित हैं जो विभिन्न जातियों के द्वारा गाये जाते हैं। यदि उन्हें उन जातियों का धरोहर कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। वीर गोपल्ला या देवार गीत, देवार जाति के द्वारा, बांस गीत के माध्यम से वीरता का वर्णन यदुवंशीयों द्वारा पण्डवानी, सतनामी सूर्यवंशी एवं शिकारी जातियों द्वारा विशेष रूचि के साथ गाये जाते हैं। अब वे लोक गाथायें उपरोक्त जातियों के आजीविका का साधन बन चुकी हैं।

लोकगाथा के लक्षण

लोकगाथा के अधोलिखित लक्षण हैंः

- **कथात्मकताः** प्रायः सभी लोकगाथाएँ किसी न किसी कहानी को लेकर चलती हैं और ये गेय होते हैं। लोकगाथा में कथा के विभिन्न तत्वों का होना आवश्यक है।
- **गेयताः** गेयता के कारण ही यह अन्य लोकगीतों से भिन्न है। इसे एक व्यक्ति या समूह में भी गाये जाते हैं।
- **वस्तु व्यंजकताः** लोकगाथाओं में वस्तुओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। तोड़–मरोड़ कर किसी भी वस्तु को उपस्थित नहीं किया जाता है। वस्तुएं ज्यों के त्यों तथा अपनी सामयिक परिवेश में ही प्राप्त होते हैं।
- **यथार्थ चित्रणः** किसी भी कथ्य को यथावत सहजरूपेण प्रस्तुत करना लोकगाथा की विशेषता है। इसके अर्न्तगत कोई बनावटी या नयापन का चमत्कार दिखाई नहीं देता।

- **भावात्मकताः** भाव, लोकगाथा का प्राण है। यदि लोकगाथा में भावों का अभाव हो गया तो वह नीरस तथा प्रभावहीन हो जाता है।
- **सरलताः** सहजता तथा सरलता तो लोकगाथा का विशिष्ट गुण है इसी गुण के कारण यह सब के लिए ग्राह्य है।
- **अलंकारों का अभावः** लोक साहित्य को निरंलकार कहा गया है। इनमें भावों की प्रधानता होती है। अलंकार गौड़ रूप में प्रस्तुत होते है।
- **लोकोक्तियों का प्रयोगः** लोकगाथा के अन्तर्गत लोकोक्तियाँ, मुहावरों, कहावतों का सहज में ही प्रयोग हो जाता है। गायक इसे अपनी बोली में प्रयोग कर, गायन में ढाल लेते हैं। जो गाथा में हमें सहज में ही प्राप्त हो जाता है।
- **छंदः** लोकगाथाओं में अधिकत्तर मात्रिक छंद ही प्रयुक्त होते है। वैसे विविध लोकगाथाओं में अलग–अलग छंदों का प्रयोग होता है।
- **नृत्यः** कथा के साथ नृत्य एक अभिन्न अंग है। गायक कथा के साथ–साथ उसके भाव को प्रदर्शित करने के लिए नृत्य भी करता है।
- **मौखिक परंपराः** लोकगाथा का कोई लिखित रूप नहीं होता। यह मौखिक रूप से पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्राप्त होती है या फिर स्वयं गढ़कर नये आयाम में इसे प्रस्तुत किया जाता है।
- **सामाजिक धरोहरः** इसके अन्तर्गत हमें विभिन्न युगों के सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है।

लोकगाथा की विशेषताएँ

लोकगाथा की अधोलिखित विशेषताएँ हैंः

- **रचयिता का अज्ञात होनाः** पं. रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार– लोकगीतों के रचयिता अज्ञात स्त्री–पुरूष हैं।
- **संगीत एवं नृत्य का अभिन्न साहचर्यः** डॉ. विनय कुमार पाठक लिखते हैं– छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में पुनरूक्ति दोष, विश्रृंखलित वर्णन क्रम, असंबद्ध भावाभिव्यक्ति और छंदों की शिथिलता विद्यमान रहती हैं, फिर भी ये लोकगाथाएँ भाव प्रवणता और संगीतात्मकता की दृष्टि से महाकाव्योचित औदात्य को स्पर्श करते हैं।
- **प्रमाणिक मूलपाठ का अभावः** प्रो. किटरेज के मतानुसार– लोकगाथाओं के निर्माण के साथ–साथ उनकी समाप्ति नही हो जाती वरन् वहीं से ही उनके निर्माण का प्रारंभ होता है।
- **स्थानीयता का पुटः** प्रो. किटरेज ने लिखा है– लोकगाथा का निर्माण किसी कारण से होता है और निर्माण के साथ–साथ उसमें तद्देशीय वाला वातावरण एवं स्थानीयता का भी समावेश हो जाता है।
- **मौखिक परंपराः** फ्रेंक सिजविक के अनुसार– लोकगाथा तभी तक जीवित रह सकती है, जब तक मौखिक साहित्य के रूप में सुरक्षित रहती है। उसे लिपिबद्ध करने का अर्थ है, उसे मार डालना।
- **उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभावः** चाइल्ड के शब्दों में– वस्तुतः लोकगाथाओं में रचयिता का कुछ भी भाग नहीं रहता। लोक गाथाएँ अपनी कथा स्वयं कहती है। उसमें रचयिता के वैयक्तिक प्रवृत्ति की तनिक भी छाया नही रहती। न तो वह अपने दृष्टिकोण से उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही करता है और न उसके विपरीत ही कुछ कहता है। लोकगाथा के चरित्रों का भी वह पक्ष नहीं होता।
- **अलंकृत शैली का अभावः** पंडित रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार– ग्राम गीत और महाकवियों की कविता में अन्तर है। ग्राम–गीत हृदय का धन है जबकि महाकाव्य मस्तिष्क का। ग्राम–गीत में रस है, महाकाव्य में अलंकार रस स्वाभाविक है और अलंकार मनुष्य निर्मित ग्राम–गीत प्रकृति के उद्‌गार है इनमें अलंकार नहीं केवल रस हैं, छंद नहीं केवल लय है, लालित्य नहीं केवल माधुर्य है।
- **टेक पदों की पुनरावृत्तिः** डॉ. विनय कुमार पाठक के अनुसार– छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में संगीत की

अभिवृद्धि प्रमुख है भावों की उद्भावना गौढ़। इसी कारण छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में अनपढ़ भाव, दुहरा–तीहरा करने की प्रवृत्ति और सरल–सहज वाक्य विन्यास उपलब्ध होते हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में प्रायः टेक या प्रमुख स्वर अस्पष्ट होता है, जबकि संगीत की दृष्टि से इसका पृथक् अस्तित्व है। छत्तीसगढ़ी सुआ गीत 'तरी हरी नाना ना ना मोर ना ना रे सुवना' से आरंभ होता है जिसमें भाव की नहीं, संगीत की सत्ता है, शब्द की नहीं, धुन की महत्ता है।

लोकगाथाओं का वर्गीकरण

विभिन्न विद्वानों ने इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से वर्गीकृत किया है जो अधोभांति हैः

- **आकार की दृष्टि सेः** इसके अन्तर्गत लोक गाथाओं को लघु, मध्यम, वृहद वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।
- **लघु गाथाः** इसके अन्तर्गत छोटी–छोटी लोकगाथाएं आती हैं।
- **मध्यम गाथाः** इसमें वे गाथा आते हैं जो आकार में न अधिक छोटे और न ही विशाल, मध्यम आकार का होता है। जैसेः गोपी चंदा की गाथा।
- **वृहत् लोकगाथाः** ये लोक गाथाएँ महाकाव्यों के समान वृहत होती हैं तथा विभिन्न सर्गों में विभक्त भी होती हैं। यदि इन्हें लिखना चाहें तो एक ग्रंथ तैयार हो सकता है। जैसे– पण्डवानी, आल्हा, ढोलामारू।
- छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोकगाथाएँ प्रेम, वीरता, साहस और भ्क्ति भाव से भरा हुआ है। डॉ. विजय कुमार सिन्हा ने विषय–वस्तु को आधार मानकर छत्तीसगढ़ी लोकगाथा को अधोभांति वर्गीकृत किया है[7]:

1. प्रेमगाथाएँ।
2. पौराणिक गाथाएँ।
3. वीर गाथाएँ।

1. प्रेम गाथाएँ

लोकगाथा के अन्तर्गत प्रेमगाथा को अधोभांति वर्गीकृत किया गया हैः

- **अहिमन रानीः** अहिमन रानी राजा वीरसिंह की पत्नी है। रानी सरोवर में स्नान करने की इच्छा व्यक्त करती है। सास मना करती है पर चौदह सखियों के साथ वह सरोवर नहाने जाती है व्यापारी से सरोवर में भेंट हो जाती है। वह घड़ा चुरा लेता है। वह अहिमन को पासा खेलने के लिए आमंत्रित करता है। रानी के सब गहने वह जीत लेता है। रानी कहती है कि अब मैं कैसे आभूषण हीन होकर राजा को मुंह दिखाऊंगी। रानी कहती है कि मेरा मायके दुर्ग राज में है। इतना सुनकर व्यापारी रानी को नये वस्त्राभूषण देता है, और सोने का घड़ा देता है। रानी लौटती है। राजा वीरसिंह वस्त्राभूषण देखकर शंकित हो जाता है। राजा की इच्छा से अहिमन अपने मायके के लिए प्रस्थान करती है। राज्य के बाहर होते ही राजा रानी की बाल पकड़ कर घोड़े की पूंछ से बांध देता है, और उसे खींचने लगता है। अहिमन रानी मर जाती है। उसका व्यापारी भाई आता है। मृत बहन को देखकर शोकमग्न होता है। इसी समय महादेव पार्वती के प्रताप से अहिमन रानी पुनर्जीवित होकर अपनी ससुराल जाती है। वीरसिंह सो रहे थे। सास के काम में वह हाथ बंटाती है। सास अहिमन को नहीं पहचान पाती। वीरसिंह भी व्यापारी के पास उसकी बहन ब्याहने का प्रस्ताव रखता है। व्यापारी वीरसिंह से कहता है कि तुम अपनी पत्नी को नहीं पहचान रहे हो? पुनः अहिमन रानी पति को प्राप्त करती है।
- **ढोला–मारूः** इस लोकगाथा में नायक ढोला और नायिका मारू है। रेवा नाम की जादूगरनी इसमें खलनायिका है। इसमें भी जादू–टोना, जंत्र–मंत्र–तंत्र तथा अंधविश्वासों का साम्राज्य है। जादूगरनी का ढोला के साथ विवाह, मारू का निमंत्रण, ढोला का भाग निकलना रेवा द्वारा फिर पकड़े जाने आदि समावेश है। इसमें ढोला की विजय तथा मारू के साथ विवाह प्रमुख प्रसंग है। साथ ही ढोला की वीरता तथा बुद्धि कौशल भी वर्णित है। नायिका मारू में नारीत्व तथा नारी जीवन की स्वाभाविकता है। यह गाथा वीर, करूण

तथा श्रृंगार रस प्रधान है।

- **लोरिक–चंदैनी:** पुरूष प्रधान प्रेम लोकगाथा में लोरिक चंदैनी की गाथा प्रमुख रूप से प्रचलित है। छत्तीसगढ़ में इस गाथा का अलग ही नाम रख लिया गया है। यहाँ उसे लोरिक चंदैनी या चनैनी नाम से संबोधित किया जाता है। इस गाथा के भिन्न रूप है। फादर बैरियर के अनुसार– इसे चनैनी नाम से सम्बोधित किया है। चनैनी अपने पिता के घर से अपने पति वीर बावन के घर जा रही है। वीर बावन गउरा का निवासी है। रास्ते में भटुआ चमार चनैनी को अपनी पत्नी बनाना चाहता है, परन्तु सहायता के लिए लोरिक आ जाता है। भटुआ को मार भगाया। लोरिक अपनी स्त्री मंजरी के साथ गउरा में ही रहता था। लोरिक की वीरता पर रीझ जाती है तथा लोरिक भी चनैनी की सुन्दरता पर आकृष्ट हो जाता है। एक दिन दोनों मिलते है तथा गउरा से भाग जाने का निश्चय करते हैं। और एक दिन समय पाकर लोरिक चनैनी को भगाकर हरदी ले जाता है। वीर बावन उनका पीछा करता है, परन्तु वह लोरिक को नहीं मार पाता। रास्ते में लोरिक को सांप काट देता है, परन्तु महादेव और पार्वती की कृपा से वह जी उठता है। आगे करिंधा के राजा से युद्ध होता है। लोरिक राजा को हरा देता है। राजा षडयंत्र भी करता है, परन्तु लोरिक बच निकलता है और हरदी चला जाता है। वहाँ वह आनंदपूर्वक रहता है। एक दिन गउरा से समाचार आता है कि मंजरी भीख मांग रही है, घर ध्वस्त हो गया, जानवर भाग गए, तथा भाई–बंधू सब खतम हो गये। यह खबर पाकर लोरिक गउरा जाता है, जहाँ मंजरी और लोरिक में मारपीट होती है। मंजरी जीत जाती है। वह घमंड के साथ पानी निकालकर देती है। परन्तु पानी गंदला निकलता है। लोरिक चला जाता है फिर नहीं लौटता।

लोरिक चन्दा में महाकाव्य सदृश मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है कवि इस लोकगाथा के माध्यम से सरस्वती और उसकी बहन सैनी का स्मरण करते हैं मंगलाचरण के पश्चात् कथा कि शुरूआत को लोकगाथाकर बहुत ही सहज, सरल ढ़ंग से प्रस्तुत करता है जो निम्नानुसार हैः

''राजा महर के बेटी ये ओ
लोरिक गावत हंवव चन्दा
ये चन्दा हे तोर
मोर जौने समे के बेटा म ओ
लोरिक गावत हंवव चन्दा
ये चन्दा हे तोर''[8]

2. पौराणिक लोकगाथाएँ

पौराणिक गाथा के अन्तर्गत फूलबासन, सरवन, पण्डवानी, देवी गाथा, भरथरी एवं गोपीचंदा की गाथाएँ हैंः

- **फूलबासनः** माता जानकी लक्ष्मण जती को फूलबासन का फूल लाने को कहती है। लक्ष्मण वनमार्ग से होकर आठ दिन और नौ रात तक चलता हुआ एक जोगी की जटा में उलझ जाता है। वह जोगी की छः दिन तक सेवा करता है। जोगी प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहते है। लक्षमण फूलबासन मांगता हैं। जोगी कहते हैं कि भावनागढ़ के राजाशाह की सात बेटियाँ है। वे सरोवर में स्नान करने आती है। छह बहिने तो किनारे स्नान करती है और सातवीं 'फूलबासन' आधी रात को सरोवर में जाकर फूल बन जाती है। वहाँ जाकर फूलबासन का वस्त्र ले आओ। लक्ष्मण फूलबासन का वस्त्र ले जाता है। सातों बहनें वस्त्र मांगने के लिए जोगी के पास आती हैं। एक बहन फूलबासन के बदले वस्त्र ग्रहण कर वापस लौट जाती है। लक्ष्मण फूलबासन को लेकर लौटते हैं और रास्ते में परिचय देते हुए कहते हैं कि यदि तुम्हें कोई देखने आये, तो फूल बन जाना। फूलबासन देखते ही देखते सरोवर में समा जाती है और फूल बन जाती है।
- **सरवनः** पौराणिक गाथाओं में सरवन गाथा भी है। श्रवण कुमार एक आदर्श पुत्र के रूप में जाना जाता है। ये एक महान मातृ–पितृ भक्त था। इनके माता–पिता अंधी–अंधा थे। श्रवण कुमार अपने माता–पिता और

अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी पत्नी का स्वभाव कपटपूर्ण था। वह कुम्हार के घर से एक ऐसा बर्तन लेकर आती है जिसमें दो प्रकार का भोजन बनता था। एक में मीठा खीर और दूसरा में खट्टा महेरी। मीठा खीर वह प्रतिदिन अपने पति को परोसती और खट्टा महेरी सास–ससुर को। एक दिन श्रवण के माता–पिता मीठा खीर खाने की इच्छा प्रकट की, तब श्रवण को ज्ञात हुआ कि उनको खीर के स्थान पर प्रतिदिन खट्टा महेरी परोसा जाता है। वह पत्नी का त्याग कर अपने माता–पिता को कांवर में बैठाकर तीर्थाटन के लिए निकलता है। रास्ते में वह जब अयोध्या के पास से गुजरता है, तब उसके माता–पिता को प्यास लगती है। वह जल लेने जाता है। घड़े से पानी भरने को जानवर की आवाज समझकर वहाँ छिपे राजा दशरथ शब्द–भेदी बाण चलाते हैं। वह बाण सरवन कुमार को लगता है। उसके मुंह से राम–राम की आवाज सुनकर राजा वहाँ पहुंचता है। राजा को मृत सरवन के अनाथ माता–पिता शाप देते हैं कि जिस तरह सरवन की मृत्यु हुई, उसी प्रकार पुत्र वियोग में तुम्हारी भी मृत्यु होगी।

''नवमास में दुनिया भये, दस मास राजा सरवन भये
अंधा–अंधी के घर उजारी भय, दान पून जग दे संसार
अपन घर में बहुलान बोले लागीन अंधी–अंधा
सुन मोरे बहू मोर बाते ल बहू भंडार पका
घर ले निकले कुलच्छन नार जावन लागे कुम्हारे पास
बोलन लागे कुलच्छन नार सुन ले भैया मोर बात
मोरे बर तै बरतन गढ़ दे एक हंडी के दुई पेट बने
ओतका ल सुने कुम्हरा भैया, कुम्हरा चाक देई चघवाय
एक हंडी के दुई पेट बनाय बना दूनो के होइन तैयार
हंडी धरे कुलच्छन नार अपन घर म आवन लाग..''[9]

- **पण्डवानी:** यह लोकगाथा छत्तीसगढ़ में प्रमुख तथा अत्यधिक लोकप्रिय है। इसमें कौरव पाण्डवों का शास्त्र सम्मत इतिहास आंचलिक आलोक में चित्रित है। कौरवों एवं पाण्डवों का युद्ध पूर्णतः धर्म सम्मत था। इसमें मुख्य नायक श्री कृष्ण थे, जो पाण्डवों के पक्ष में थे। अन्त में कौरवों की हार और पाण्डवों की विजय होती है। इसे गायक रसात्मक शैली में तानपुरे (तम्बुरे) पर गाता है। साथ में हारमोनियम, तबला, मंजीरा आदि का समायोजन भी रहता है। यह महाभारत का ही छत्तीसगढ़ी अनुवादी रूप है। यह लोकगाथा शैली में रूपान्तरण है। प्रस्तुत अंश में 'भीष्म' (देवव्रत) का जन्म वृतांत द्रष्टव्य है:

''कुछ दिन के गए ले आठवां बसु ह बंधवा
जेने ह गेरवा ल छोरे रहिस भाई जनम लेवै गा,
राजा के भवन म जनम लेवय भाई
माता गंगा ह उहू ल कहय भाई
लेजा–लेजा लेजा गंगा म डार देन
ओ दिन राजा मोरे शांतनु कहन लागे भाई
ये ही किसिम रानी मोर सातो बेटा ल
गंगा म जाके डरवाई दे हे भाई
तीसर पन ले चौथा पन आगे
नई देवव बालक ल चाहे तोर
मोर बिछुड़न हो जावय भाई।''[10]

- **भरथरी की गाथाः** भरथरी की गाथा प्रायः भिक्षा मांगते हुए छत्तीसगढ़ी लोकगाथाकार गाते हैं। विख्यात चरित्र नायक को आंचलिक पुट देकर लोकगाथाकार प्रस्तुत करता है। भरथरी के सन्यास पर आधारित ''मछिन्दर गुरू'' अर्थात् मत्स्येन्द्र नाथ की कथा देशव्यापी है, जो शिष्ट और लोकसाहित्य में अद्यावधि गतिमान है। इसके अतिरिक्त भरथरी के सन्यास ग्रहण पर अनेक मत है, लेकिन यहाँ के एक मत को समादृत करने वाली भरथरी की विशिष्ट गाथा का उल्लेख किया जा रहा है।

विवाह के तुरन्त बाद प्रथम मिलन के अवसर पर राजा के बैठने पर सोने का पलंग टूट जाता है और रानी के हंसने से राजा भरथरी असमंजस में पड़ जाते हैं। वे अपने साली से इसका कारण पूछते हैं। वह कहती है– मैं अपनी बिदाई के समय इसका कारण बताऊंगी। अपने विवाह के उपरांत बिदाई के समय वह राजा भरथरी को उनके सात पूर्व जन्मों का वृतांत सुनाते हुए पलंग के टूट जाने एवं रानी के हंसने का रहस्योद्घाटन करती हुई कहती है कि इस जन्म में जो आपकी अर्धांगनी है, वही पूर्व जन्म में आपकी माता थी।

राजा भरथरी के जन्म के संबंध में भी छत्तीसगढ़ी लोकगाथा में रोचक वर्णन है। उनके माता–पिता के विवाह के काफी समय के बाद एक योगी के प्रसाद को खाने से इनका जन्म हुआ था। इस गाथा में राजा भरथरी की माँ की संतान न होने की पीड़ा का अत्यंत कारूणिक शैली में चित्रण मिलता है।

जा दिन जनमे राजा भरथरी बाजे तबला निसान
हरियर गोबर मंगायके आंगन डारे लिपाय
गज मोती चौक पुराय के गाय मंगल चार
कासी ले पंडित बुलायके चौके चंदन बिछाय
अब तो बोले रानी रूपमती सुन पंडित मोर बात
लइका के नांव धराय के तोला देहंव दान
हाथी देहंव हथसार ले, घोड़ा देवय घोड़सार
आधा राज ला तोला देहंव रखले मोर बात
पलटी वचन बोलय पंडित सुन रूप देवी बात
कागज होतिस पोथी बांचतेव, करम बांचे न जाय
कुंआ रतिस कुंआ पाटतेंव समय न पाटे जाय
उलटी पुलटी पंडित बांचय, उलटी पुलटी धरथ नाम
नाम निकलय राजा भरथरी करम लिये बड़ जोर।[11]

3. वीरगाथाएँ

वीरगाथाएँ के अन्तर्गत प्रमुख लोकगाथाएँ अधोभांति हैः

- **फूलकुंवरः** वीरगाथाओं में फूलकुंवर की गाथा प्रसिद्ध है। फूलकुंवर राजा जगत की बेटी थी। एक बार राजा जगत से मुगल राज्य मांगते है। राजा जगत इस बात से परेशान रहने लगे। उनका मन राजपाट के कार्यों में नहीं लगता था। उनके उदास चेहरे को देखकर फूलकुंवर अपने पिता से कारण पूछा। जब राजा जगत अपनी पुत्री से सारी बात बताता है, तब फूलकुंवर सैनिक की साज–सज्जा के साथ मुगलों से युद्ध करती है। मुगल परास्त होकर भाग जाते हैंः

''हरके नई मानय तोर बरजे नई मानय
धरन लाने मोर ढाल तलवार
हाथी अऊ घोड़ा पलटन धर के
जावन लागे लड़ाई के मैदान

घोड़ा निकाले फूलकुंवर बेटी
अब तो दाई सन बोलन लागीस
मोला बता दे दाई मरद के कपड़ा
सबो के सबो चकित भइगे परजा
कसन लागे फूलकुंवर पोशाक
दाई लंग मांगे लड़ाई के पानल
इंद्रो के घोड़ा फूलकुंवर चढ़िगे।''[12]

- **दसमत कैना**ः दसमत कैना ब्राह्मण राजा भोज की सात बेटियों में सबसे छोटी बेटी थी। राजा अपने बेटियों से पूछता है कि वे किसके भाग्य का खाती है। छः बेटी बोली, हम आपके भाग्य का खाते हैं और सबसे छोटी बेटी दसमत अपनी अन्य बहनों के विपरीत यह कहती है कि वह अपने भाग्य का खाती है। राजा भोज यह कैसे बर्दाशत करता? उसे तो अपने आपको अन्नदाता कहलाने की आदत है। वह उस कन्या के लिए ऐसे वर की खोज करता है जो रात को खाना खाय तो दिन के लिए खाने का ठिकाना न रहे और यदि दिन में भोजन मिले तो रात के खाने के लाले पड़ते हो। राजा के इच्छानुसार सुदन बिहइया नामक पत्थर तोड़ने वाले उड़िया मजदूर से दसमत का विवाह कर दिया जाता है, पर दसमत अपनी हिम्मत और वीरता से धनवान बन जाती है। वह उड़ीया कबीले की मुखिया बन जाती है जिसमें नौ लाख उड़ीया हैं। वे बांध और तालाब बनाने में माहिर हैः

राजा भोज के बेटी कइना ओ दसमत
अऊ महफिल बमनीन के सुजात
नौ लाख ओड़िया मन बांधन कोड़े लगे
ओड़निन माटी ल डोहार....
बइठे ग राजा कदम के छईहा म बाह्मन
राजा ह बिन–बिन ढेला में मार....
कइना ल गोटि म करिके खियाल ग
अरे एके ढेलवा के लागे के राजा ददा मुड़ा जाय
दूसरे ढेलवा दसमत लागे, भइया मुड़ा जाई लग जाय
तीसरे ढेलवा तन पर लागे मारंव कुदारी के घांव
''हिन्दु जात के बेटी बनाबे हिन्दु कहाइ लेबे आज
फेर ओड़िया के बेटी बनाबे हांसे नेंगी देवाल गा।
अऊ हांसन दे हंसवईया ल ओ दसमत कइना बाई
मोर लेखे गुंडी गुलाल
मोर लेखे पबरीत ओड़निन कइना
मोर लेखे चोवा फूलेल।''[13]

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएँ एक ओर जहाँ सार्वदेशिक लोकगाथाओं के आंचलिक रूप को उद्घाटित करती हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय रंग व तरंग के अनुरूप विशिष्ट लोकगाथाओं को भी प्रस्तुत करती है। जिन गाथाओं का क्षेत्र वृहद् विस्तृत है, वे इस अंचल में भी प्रचलित हैं जबकि इतिहासकारों के मौन रहने के बावजूद अनेक स्थानीय

गाथाएँ छत्तीसगढ़ी जनमन में रची बसी है। ये गाथाएँ इस अंचल की धरोहर ही नहीं अपितु ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। लोकगाथाकार कल्पना कौशल व भावसागर के सहारे त्रिलोक को ही गेय कथा की सीमा समझता है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएं छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनमें स्थानीय भाषा, संगीत, और रंगमंचन का महत्वपूर्ण योगदान होता है और ये समाज के अद्यतन संदेशों को समाहित करने में मदद करती हैं।

संदर्भ सूची

1. सिन्हा, विजयकुमार (2000) *छत्तीसगढ़ी लोकगाथा एक अध्ययन,* प्राक्कथन, निर्मल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 108।
2. सिन्हा, विजयकुमार (2000) छत्तीसगढ़ी लोकगाथा एक अध्ययन, निर्मल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली, पृ. 116।
3. सिंह, ब्रजभूषण (1979) *''छत्तीसगढ़ की विभूतियां एवं लौकिक प्रसून''* आदर्श छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक मंडल भोपाल, पृ. 73।
4. सिंह, ब्रजभूषण (1979) ''छत्तीसगढ़ की विभूतियां एवं लौकिक प्रसून'' आदर्श छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक मंडल भोपाल पृ. 74।
5. पाठक, विनयकुमार (2008) *छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का सांस्कृतिक अनुशीलन,* नेहा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 13।
6. शुक्ल दयाशंकर (1969) *छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन,* ज्योति प्रकाशन, रायपुर, पृ. 275।
7. शुक्ल दयाशंकर (1969) *छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन,* ज्योति प्रकाशन, रायपुर, पृ, 276।
8. निर्मलकर, बलदाऊ प्रसाद (1987) ''महाभारत और छत्तीसगढ़ी लोकगाथा पंडवानी का तुलनात्मक अध्ययन'' गुरू घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.), पृ. 105।
9. शर्मा पालेश्वर प्रसाद (1990) *छत्तीसगढ़ की परंपरा और इतिहास,* रचना प्रकाशन इलाहाबाद, पृ. 135।
10. शुक्ल दयाशंकर (1969)– छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य का अध्ययन, ज्योति प्रकाशन, रायपुर, पृ. 261।
11. यादव काली दास (2004) "छत्तीसगढ़ी लोकगाथा दसमत कैना पर एकाग्र'' , लोक मड़ई, प्रकाशन, बिलासपुर, पृ. 51।

——==00==——